Baba’s Praise

11/6/2015

- वृक्षपति अथवा इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का जो बीजरूप है, चैतन्य है, वही इस झाड़ के आदि- मध्य-अन्त को जानते हैं, और जो भी वृक्ष हैं वह सब जड़ होते हैं।
- तो बच्चे जानते हैं यह है वृक्षपति। उनको फादर रचता भी कहते हैं झाड़ का। यह है चैतन्य बीजरूप। वह सब होते हैं जड़।
- यह भी तुम जानते हो ज्ञान का सागर बाप निराकार है।
- शिवबाबा हम आत्माओं का बाबा है, वह तो जरूर बच्चे-बच्चे ही कहेंगे।

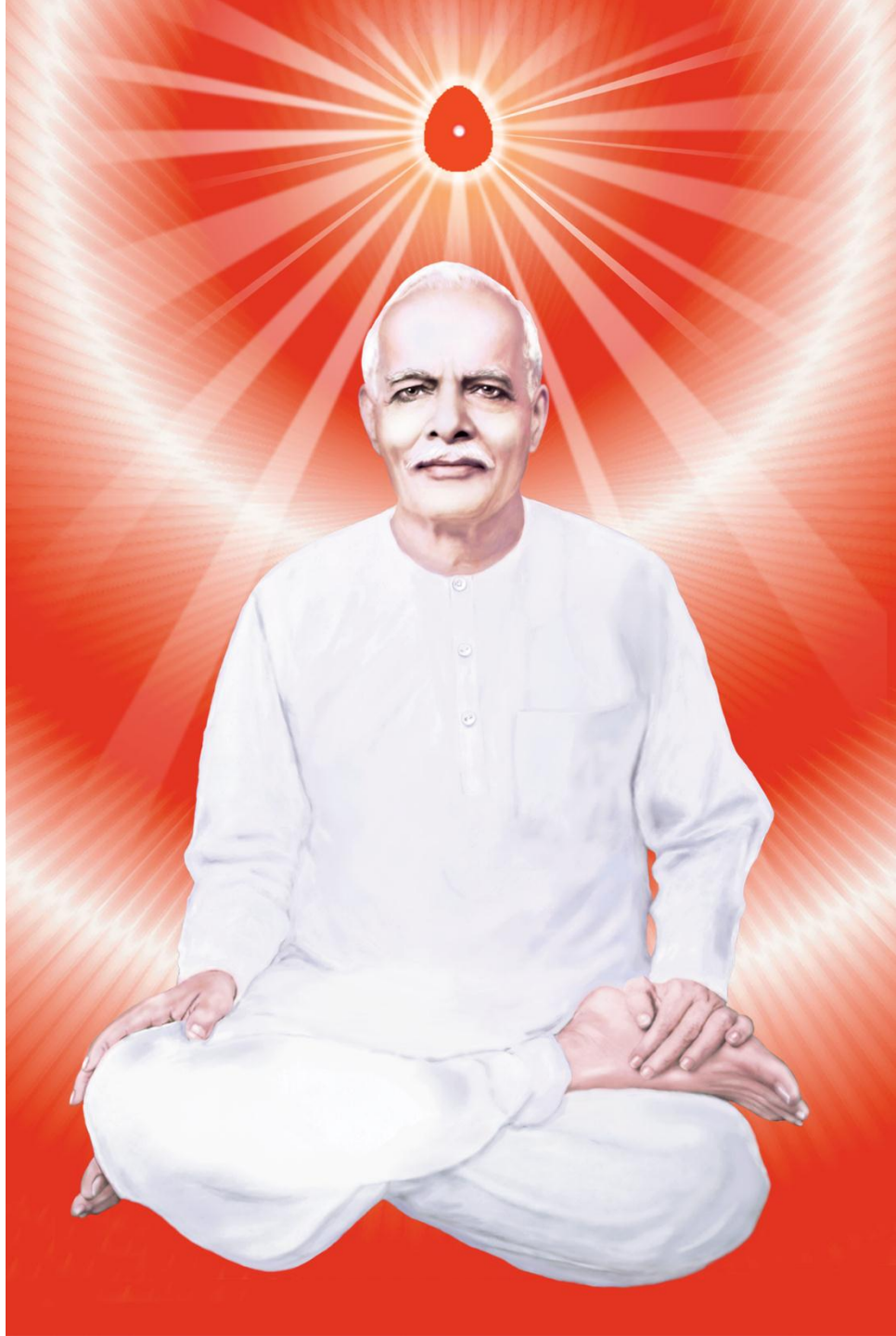

- पहले-पहले तो समझाना ही यह है, दो बाप हैं ना। एक लौकिक और दूसरा पारलौकिक। बड़ा तो जरूर पारलौकिक बाप हो गया, जिसको भगवान कहा जाता है।
- तुम सब आशिक थे, उस माशूक के। सारी दुनिया आशिक है एक माशूक की। परमात्मा को सब परमपिता भी कहते हैं।
- बाप को कहा जाता है पतित-पावन, ज्ञान का सागर, दो चीज हो गई। पतितों को पावन बनाते और 84 के चक्र का ज्ञान सुनाते हैं।
- बाप कितना मीठा है, उनको पतियों का पति भी कहते हैं। बाप भी है।